विद्या रहित
मनुष्य पशु
समान है।
वह
विद्या कौन सी?
-महात्मा गांधी-

दैनिक
लोक जीवन
www.lokjeewan.com
जयपुर एवं भीलवाड़ा से प्रकाशित राज्य स्तरीय समाचार पत्र
संस्थापक - स्व. डॉ. शिवकुमार जी त्रिवेदी

लोक जीवन में विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें:-
- : जयपुर : -
0141-4038281
- : भीलवाड़ा : -
8306792625

वर्ष- 19 | अंक- 204 | जयपुर. सोमवार . | 23 नवम्बर , 2026 | RNI No. RAJHIN/2008/26744 | मूल्य 1 रूपया | पृष्ठ - 4

न्यूज इनबॉक्स

पाकिस्तान को भारत का करारा जवाब, मंत्री का ताली बजाते वीडियो साझा

नई दिल्ली (एजेंसी)। रविवार को भारत ने पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए एक वीडियो शेयर किया है. इस वीडियो में पाकिस्तानी मंत्री मुसादिक मलिक 'पुराना किला' में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान ताली बजाते हुए दिखाई दे रहे हैं। भारत ने उस पल को दिखाया जब मलिक भारतीय सभ्यता, कश्मीर की संस्कृति और महाभारत पर हो रही एक प्रस्तुति के दौरान ताली बजा रहे थे। इसका इस्तेमाल उन्होंने कश्मीर और भारत को लेकर पाकिस्तान की पिछली टिप्पणियों का जवाब देने के लिए किया। भारत के आधिकारिक अकाउंट ने पाकिस्तानी नेताओं के बयानों का एक वीडियो मोंटाज शेयर किया, जिसमें सेना प्रमुख फील्ड मार्शल आसिम मुनीर और मुसादिक मलिक के बयान शामिल हैं। इसके बाद, इन बयानों के साथ उन वीडियो को दिखाया गया है, जिनमें मलिक और अन्य प्रतिनिधि 'स्ष्ठह सिविलाइजेशनल डायलॉग फोरम' में ताली बजाते नजर आ रहे हैं। भारत के आधिकारिक अकाउंट से पोस्ट किए गए इस वीडियो में बैकग्राउंड म्यूजिक के तौर पर फिल्म 'धुरंधर' का गाना 'आरी-आरी' इस्तेमाल किया गया है। इसमें कश्मीर, भारत के जल संसाधनों और हिंदुओं के बारे में दिए गए बयानों की क्लिप्स को एक साथ रखा गया है। वीडियो में इन बयानों और भारत की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाने वाले कार्यक्रम में पाकिस्तानी मंत्री की मौजूदगी के बीच के विरोधाभास को दिखाया गया है। भारत ने अपनी पोस्ट के कैप्शन में लिखा, 'जो लोग कश्मीर पर दावा करते हैं, भारत को तोड़ने की धमकी देते हैं और हिंदुओं का अपमान करते हैं... वे 'पुराना किला' में भारत की सभ्यता, कश्मीर की संस्कृति और महाभारत महाकाव्य के लिए ताली बजा रहे हैं।' साथ ही उन्होंने कहा, 'यह नए भारत का जवाब है!'

यूपी के 75 जिलों में ब्लैकआउट मॉकड्रिल, परखी गई तैयारियां

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के सभी 75 जिलों में रविवार शाम 6 बजे ब्लैकआउट मॉकड्रिल आयोजित हुई। नागरिक सुरक्षा विभाग की ओर से होने वाले इस अभ्यास में युद्ध और आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने की तैयारियों को परखा। इस दौरान एयर रेड की चेतावनी देने वाला सायरन करीब दो मिनट तक बजा। इसके साथ ही कई इलाकों में कुछ समय के लिए बिजली आपूर्ति बंद की गई। लखनऊ की रिजर्व पुलिस लाइन में एयर रेड और ब्लैकआउट मॉकड्रिल का आयोजन हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शाम छह बजे पहुंचकर अभ्यास का जायजा लिया। मॉकड्रिल में पुलिस, फायर ब्रिगेड, स्वास्थ्य विभाग और आपदा राहत से जुड़ी टीमें हिस्सा लिया। इनके बीच आपसी समन्वय और आपात स्थिति में त्वरित कार्रवाई की क्षमता को परखा। प्रशासन की ओर से नागरिकों को मॉकड्रिल के दौरान घबराने के बजाय सावधानी बरतने की सलाह दी गई थी। लोगों से कहा गया कि सायरन बजने पर घर या किसी सुरक्षित स्थान के भीतर रहें। अनावश्यक रोशनी बंद रखें और बच्चों व पालतू जानवरों का विशेष ध्यान रखें। यह अभ्यास वास्तविक हमले की स्थिति नहीं, बल्कि आपातकालीन तैयारियों को जांचने की प्रक्रिया का हिस्सा था। मॉकड्रिल में पुलिस, नागरिक सुरक्षा, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, फायर ब्रिगेड और स्वास्थ्य विभाग की टीमें शामिल हुईं। अभ्यास के दौरान आपात स्थिति में विभिन्न एजेंसियों के बीच समन्वय, सायरन सिस्टम की कार्यक्षमता और राहत एवं बचाव अभियान चलाने की तैयारियों को परखा गया। टीमों ने यह भी प्रदर्शित किया कि संकट के समय लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाने और घायलों को तत्काल मदद देने के लिए किस तरह कार्रवाई की जाती है। प्रशासन की ओर से नागरिकों को मॉकड्रिल के दौरान घबराने के बजाय सावधानी बरतने की सलाह दी गई थी। लोगों से कहा गया कि सायरन बजने पर घर या किसी सुरक्षित स्थान के भीतर रहें। अनावश्यक रोशनी बंद रखें और बच्चों व पालतू जानवरों का विशेष ध्यान रखें।

सपा-कांग्रेस भाजपा को हराने के लिए गंभीर नहीं : चंद्रशेखर आजाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। आजाद समाज पार्टी (कांशी राम) के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने रविवार को दावा किया कि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस भाजपा को हराने के लिए गंभीर नहीं हैं। उन्होंने कहा कि अगले साल होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में भाजपा को एकजुट होकर चुनौती देने के लिए 'सामाजिक परिवर्तन मोर्चा' में शामिल होने के द्वार इन दलों के लिए खुले हैं। नगीना सांसद आजाद ने समाचार एजेंसी पीटीआई को दिए एक साक्षात्कार में यह बात कही। आजाद ने बताया कि उन्होंने सभी विपक्षी दलों से गठबंधन बनाने के लिए संपर्क किया था। उन्होंने जिम्मेदार नेताओं को औपचारिक संदेश भी भेजे थे। जब उन्हें लगा कि वे साथ नहीं आना चाहते, तो उन्होंने अलग मोर्चा बनाने का फैसला किया। उनका अनुभव बताता है कि भाजपा को हराने के लिए बड़े वोट शेयर वाले बड़े गठबंधन की आवश्यकता है। उन्होंने 2017 और 2022 के चुनावों का उदाहरण दिया। आजाद ने सपा-कांग्रेस पर आरोप लगाया कि वे 2017, 2019, 2022 और 2024 में भी गंभीर नहीं थे। उन्होंने कहा कि इन विपक्षी दलों में भाजपा को रोकने की इच्छा नहीं है।

कोटा-उदयपुर हाईवे पर भीषण दुर्घटना

क्रूजर और ट्रेलर की भिड़ंत में 9 श्रद्धालुओं की मौत, कई घायल

कोटा (एजेंसी)। कोटा-उदयपुर हाईवे पर रविवार को एक भीषण सड़क हादसे में 9 श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हो गए। शंभूपुरा के पास श्रद्धालुओं से भरी एक क्रूजर गाड़ी सड़क किनारे खड़े ट्रेलर में पीछे से जा घुसी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि क्रूजर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार लोग अंदर फंस गए। मृतकों में एक ही परिवार के कई सदस्य शामिल बताए जा रहे हैं। सभी महाराष्ट्र के रहने वाले थे और खाटूश्यामजी मंदिर में दर्शन करने के बाद अपने घर लौट रहे थे।





जानकारी के अनुसार, महाराष्ट्र से आए श्रद्धालु चार अलग-अलग वाहनों में सवार होकर यात्रा कर रहे थे। इन सभी वाहनों में कुल 36 लोग सवार थे। यात्रा के दौरान कुछ वाहन आगे निकल गए, जबकि अन्य पीछे रह गए। इसी बीच शंभूपुरा के पास आगे चल रही क्रूजर सड़क किनारे खड़े ट्रेलर से टकरा गई। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई और क्रूजर में सवार लोग वाहन के अंदर फंस गए। एडीएम प्रशासन राजेश जोशी ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, क्रूजर चालक को नींद की झपकी आने से वाहन अनियंत्रित हो गया और सड़क किनारे खड़े ट्रेलर में जा घुसा। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस और प्रशासन के अधिकारी मौके पर पहुंचे। एसपी सहित अधिकारियों ने घटनास्थल का जायजा लिया। पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से राहत एवं बचाव कार्य शुरू कराया और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया। हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई, जबकि आधा दर्जन से अधिक घायल हो गए। घायलों का अस्पताल में उपचार जारी है। वहीं, मृतकों के शव पोस्टमार्टम के लिए भेजे गए हैं। एक ही परिवार के कई सदस्यों की मौत से परिजनों और परिचितों में शोक की लहर है। पुलिस हादसे के कारणों की जांच कर रही है।

हादसे में शामिल श्रद्धालुओं के समूह के एक सदस्य ने बताया कि वे सभी खाटूश्यामजी से धार की ओर जा रहे थे। समूह की चार गाड़ियों में से कुछ वाहन आगे निकल गए थे, जबकि दो गाड़ियां पीछे रह गई थीं। इसी दौरान समूह में शामिल एक महिला का फोन आया कि वाहन दुर्घटनाग्रस्त हो गया है। सूचना मिलते ही वे तुरंत घटनास्थल की ओर रवाना हुए।

भारत पहुंचे नेपाल के पीएम बालेन शाह, मोदी से आज होगी अहम वार्ता

ऊर्जा, व्यापार और कनेक्टिविटी बढ़ाने पर रहेगा जोर; लिपुलेख-कालापानी सीमा विवाद सहित पुराने मतभेदों पर भी चर्चा की संभावना

नई दिल्ली (एजेंसी)। नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन शाह पद संभालने के बाद अपने पहले आधिकारिक भारत दौरे पर रविवार को नई दिल्ली पहुंचे। दो दिवसीय इस राजकीय दौरे के दौरान ऊर्जा, बुनियादी ढांचे, कनेक्टिविटी और द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर खास चर्चा होगी। दिल्ली हवाई अड्डे पर केंद्रीय मंत्री जितिन प्रसाद ने उनका स्वागत किया। बता दें कि बालेन शाह के साथ 34 सदस्यीय आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल और एक अलग व्यापारिक दल भी भारत आया है।



नेपाल के विदेश सचिव अमृत बहादुर राय के मुताबिक, बालेन शाह सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता करेंगे। इस दौरान दोनों नेता ऊर्जा से जुड़ी कई परियोजनाओं का संयुक्त रूप से उद्घाटन करेंगे और आपसी सहयोग के विभिन्न समझौतों का आदान-प्रदान भी करेंगे। इसके अलावा, बालेन शाह राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात करेंगे। साथ ही राजघाट जाकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे और नेपाल-भारत बिजनेस फोरम में भी हिस्सा लेंगे।

विदेश मंत्रालय के अनुसार, इस दौरे में विकास सहयोग, ऊर्जा, रेल-सड़क और हवाई कनेक्टिविटी, व्यापार व पर्यटन के साथ-साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्टार्टअप्स, नवाचार और खेल जैसे नए क्षेत्रों में साझेदारी बढ़ाने पर बात होगी।

अच्छा गौर करने वाली बात यह है कि शाह के इस दौरे पर सहयोग बढ़ाने के साथ ही दोनों देशों के बीच लंबे समय से चले आ रहे मतभेदों पर भी बातचीत होने की संभावना है। इस बात को ऐसे समझा जा सकता है कि लिपुलेख, कालापानी और लिंपियाधुरा को लेकर सीमा विवाद तथा भारतीय सेना में नेपाली गोरखाओं की भर्ती से जुड़े मतभेदों पर चर्चा हो सकती है।

राजस्थान में सर्द हवाओं ने बढ़ाई ठिठुरन, माउंट आबू में पारा जीरो पर



जयपुर (कासं)। उत्तर भारत के पहाड़ी क्षेत्रों जम्मू-कश्मीर, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश से आ रही सर्द हवाओं के चलते राजस्थान में सर्दी का असर बढ़ने लगा है। प्रदेश के उत्तरी जिलों चूरू, सीकर, झुंझुनूं और फतेहपुर के साथ अब अन्य इलाकों में भी ठंडी हवाओं से गलन महसूस होने लगी है। हिल स्टेशन माउंट आबू में लगातार दूसरे दिन रविवार को न्यूनतम तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। कड़ाके की ठंड के चलते यहां पोलो ग्राउंड में ओस की बूंदें जम गईं। वहीं, मैदानी इलाकों में खड़े वाहनों के शीशों पर भी ओस जमने से सर्दी का असर साफ नजर आया।

मौसम विभाग के अनुसार प्रदेश में अगले एक सप्ताह तक मौसम शुष्क और आसमान साफ रहने की संभावना है। इस दौरान सर्दी का असर बना रहेगा। इससे पहले शनिवार को सिरोही के तापमान में करीब दो डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई और अधिकतम तापमान 22.4 डिग्री सेल्सियस रहा। सर्द हवाओं के कारण दोपहर के समय भी लोगों को हल्की ठिठुरन महसूस हुई। पिछले 24 घंटों के दौरान प्रदेश के उत्तरी हिस्सों को छोड़कर अधिकांश इलाकों में मौसम साफ रहा।

न्यूजीलैंड के खिलाफ 720 रन बनाकर भारत ने बनाए कई महारिकॉर्ड



वेलिंगटन (एजेंसी)। शुभमन गिल की अगुवाई वाली टीम इंडिया ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पहली पारी में 720 रन बनाकर इतिहास रच दिया है। यह न्यूजीलैंड की सरमजीं पर किसी भी द्वारा बनाया गया आज तक का सबसे बड़ा स्कोर है। जी हां, खुद मेजबान टीम भी आज तक इतना बड़ा स्कोर नहीं बना पाई। केएल राहुल और ऋषभ पंत के शतकों के दम पर टीम इंडिया यह कमाल करने में कामयाब रही। टॉस जीतकर पहले बॉलिंग करने उतरी भारतीय टीम ने न्यूजीलैंड की पहली पारी को 368 रनों पर समेट दिया था। हेनरी निकल्स और ग्लेन फिलिप्स की सेंचुरी के दम पर कीवी टीम इस स्कोर तक पहुंचने में कामयाब रही थी। इसके जवाब में भारत ने 8 अर्धशतकीय साझेदारी की। 2 बल्लेबाजों ने शतक लगाए और 4 बल्लेबाज -यशस्वी जायसवाल, देवदत्त पडिक्कल, शुभमन गिल और ध्रुव जुरेल- अर्धशतक लगाने में कामयाब रही। भारतीय पारी के दौरान 10 महारिकॉर्ड्स बने।

भारत बनाम न्यूजीलैंड टेस्ट में बने कई रिकॉर्ड

- न्यूजीलैंड की सरजमीं पर सबसे बड़ा टेस्ट स्कोर भारत ने बनाया है। इससे पहले मेजबान टीम ने बांग्लादेश के खिलाफ 2019 में 715 रन बनाए थे।
- भारत ने घर के बाहर अपना सबसे बड़ा टेस्ट स्कोर बनाया है। इससे पहले टीम इंडिया ने श्रीलंका के खिलाफ 2010 कोलंबो टेस्ट में 707 रन बनाए थे ।
- वेलिंगटन के बेसन रिजर्व स्टेडियम में भी पहली बार कोई टीम 720 रन बना पाई है। यह इस मैदान का भी आज तक का सबसे बड़ा स्कोर है।
- भारतीय टीम ने 5वीं बार टेस्ट क्रिकेट में 700 रन का आंकड़ा पार किया है। वर्ल्ड रिकॉर्ड श्रीलंका के नाम है जिन्होंने 7 बार यह कारनामा किया है।
- न्यूजीलैंड की सरजमीं पर भारत 700 रन का आंकड़ा पार करने वाली पहली मेहमान टीम बनी है।
- 720 रन टेस्ट मैचों में न्यूजीलैंड के खिलाफ सबसे बड़ा इनिंग टोटल है, इससे पहले 1995 में इसी जगह पर वेस्टइंडीज ने 660/5स्त्र का स्कोर बनाया था।
- 1955 में भारत और न्यूजीलैंड के बीच पहला टेस्ट मैच खेला गया था। पिछले 71 सालों में यह दोनों देशों के बीच खेले गए टेस्ट मैचों का सबसे बड़ा स्कोर है।
- टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में भारत पहली ऐसी टीम बनी है जिसने एक पारी में पहले सात विकेट के लिए 50 से ज्यादा रनों की पार्टनरशिप की है।

मोदी से बातचीत का किस्सा सुनाकर पुतिन ने की भारत की तारीफ

मॉस्को (एजेंसी)। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन समय-समय पर भारत की संस्कृति और विविधता की तारीफ करते रहे हैं। बीते दिनों भी पुतिन ने एक इंटरव्यू में भारत भाषाई और सांस्कृतिक विविधता की जमकर तारीख की। रूसी राष्ट्रपति ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हुई अपनी एक बातचीत का जिक्र करते हुए भारत की भाषाई विविधता की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि यह देखकर हैरानी होती है कि भारत में आधी से ज्यादा आबादी अपनी-अपनी भाषाएं बोलती है। स्पुतनिक की रिपोर्ट के मुताबिक, इंटरव्यू में पुतिन ने कहा कि उदाहरण के लिए भारतीय सभ्यता को ही लीजिए... यह सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है। यह बेहद दिलचस्प है। मैं इसके बारे में जितना ज्यादा जानता हूं, उतना ही इससे आकर्षित होता जाता हूं। इस दौरान पुतिन ने प्र.म. मोदी से जुड़ा से एक किस्सा भी सुनाया। पुतिन ने बताया कि उन्होंने हाल ही में प्र.म. मोदी से बातचीत के दौरान पूछा था कि भारत में कितने लोग आधिकारिक भाषा बोलते हैं। पुतिन के अनुसार, प्र.म. मोदी ने जवाब दिया था कि लगभग 60 करोड़ लोग। इस पर पुतिन ने देश की कुल आबादी के बारे में पूछा, तो प्र.म. मोदी ने बताया कि यह डेढ़ अरब के करीब है। रूसी राष्ट्रपति ने इंटरव्यू में बताया कि प्र.म. मोदी जवाब सुनकर वे बेहद प्रभावित हुए और बोले कि यानी सिर्फ एक-तिहाई आबादी ही ऐसी भाषा बोलती है। बाकी दो-तिहाई आबादी के बारे में जब मैंने पूछा, तो मोदी ने कहा कि वे अपनी-अपनी भाषाएं बोलते हैं। पुतिन ने हैरानी जताते हुए कहा कि क्या यह कमाल की बात नहीं है? यह वाकई हैरान कर देने वाला है।



मंदिर और दरगाह के बीच दशकों पुराना विवाद फिर चर्चा में

दीपथून पर दीप जलाने की अनुमति को तमिलनाडु सरकार ने दी चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। मदुरै की तिरुपरनकुंद्रम पहाड़ी पर आस्था और अधिकार की दशकों पुरानी जंग एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट की दहलीज पर पहुंच गई है। तमिलनाडु सरकार के हिंदू धार्मिक और धर्मार्थ बंदोबस्ती विभाग (एचआरसीई) ने सुप्रीम कोर्ट के उस अंतरिम आदेश पर पुनर्विचार याचिका दायर की है। इसमें पहाड़ी की चोटी पर स्थित प्राचीन पत्थर के स्तंभ 'दीपथून' पर 24 नवंबर को एक बार के लिए पारंपरिक कार्तिगई दीपम जलाने की अनुमति दी गई थी।



शुक्रवार को जस्टिस अरविंद कुमार और जस्टिस विपुल एम पंचोली की पीठ ने सख्त शर्तों के साथ यह अस्थायी व्यवस्था दी थी। कोर्ट ने स्पष्ट किया था कि केवल देवस्थानम (मंदिर प्रशासन) की अधिकृत टीम और अधिकारी ही पुरातत्व विभाग (एएसआइ), पुलिस और मदुरै जिला कलेक्टर की निगरानी में यह अनुष्ठान करेंगे।

इस दौरान किसी भी जुलूस, नारेबाजी या आम जनता के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया था। साथ ही, जरूरत पड़ने पर सीआरपीएफ की तैनाती के निर्देश भी दिए गए थे। दरअसल, विवाद की जड़ पहाड़ी की चोटी पर स्थित हजरत सुल्तान सिकंदर बादशाह औलिया दरगाह और 'दीपथून' स्तंभ की महज 50 मीटर की नजदीकी है। दशकों से दीप निचली ढलान पर स्थित दीप मंडपम में जलाया जाता रहा है। दरगाह पक्ष ने पूरी चोटी पर अपना स्वामित्व जताते हुए इसका विरोध किया है।

इससे पहले राज्य के मंत्री सीटीआर निर्मल कुमार ने कानूनी विशेषज्ञों से राय लेकर अगला कदम उठाने के संकेत दिए थे। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया है कि यह अस्थायी अनुमति मद्रास हाईकोर्ट के छह जनवरी, 2026 के फैसले पर मुहर नहीं है, जिसकी वैधता पर जनवरी 2027 के दूसरे सप्ताह में विस्तार से सुनवाई होगी। इस पूरे मामले ने धार्मिक परंपराओं, संपत्ति के अधिकार और प्रशासनिक व्यवस्था से जुड़े कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े कर दिए हैं। दोनों पक्षों के बीच लंबे समय से चले आ रहे मतभेद के कारण यह मामला संवेदनशील बना हुआ है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने अंतरिम आदेश में कानून-व्यवस्था बनाए रखने को विशेष प्राथमिकता दी है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि निर्धारित शर्तों का पालन करना सभी संबंधित पक्षों के लिए अनिवार्य होगा।

प्रशासन के सामने अनुष्ठान को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के साथ-साथ दोनों पक्षों की भावनाओं और सुरक्षा का ध्यान रखने की चुनौती होगी। पुरातत्व विभाग की मौजूदगी में प्राचीन स्तंभ पर धार्मिक अनुष्ठान कराया जाना भी इस मामले का महत्वपूर्ण पहलू है।

दैनिक लोकजीवन
जयपुर एवं भीलवाड़ा से एक साथ प्रकाशित
संपादक - स्व. श्री शिवकुमार जी त्रिपाठी

दुनिया के तीन दिग्गज मिले, लेकिन वैश्विक संकटों पर नहीं निकला समाधान

सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक शिखर सम्मेलन में पूरी दुनिया की नजरें इस बात पर थीं कि करीब 90 मिनट चली इस बातचीत से आखिर क्या हासिल हुआ? अमेरिका-चीन संबंधों के विशेषज्ञ के रूप में मुझे इस बैठक में दिखावा और प्रतीकात्मकता तो खूब नजर आई, लेकिन ठोस नतीजे बहुत कम दिखाई दिए। इस बैठक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू इसका प्रतीकात्मक महत्व था। शेनझेन में तीनों नेताओं के हाव-भाव और उनके आपसी व्यवहार पर काफी कुछ निर्भर था। इससे यह संकेत मिलता है कि वे एक संभावित नई वैश्विक व्यवस्था में खुद को कैसे देखते हैं। इसकी झलक ट्रंप के शेनझेन पहुंचने के साथ ही मिलने लगी थी। हवाईअड्डे पर खुद शी जिनपिंग ने उनका स्वागत किया। चीन में किसी विदेशी नेता का राष्ट्रपति की ओर से हवाईअड्डे पर स्वागत किया जाना विशेष सम्मान का संकेत माना जाता है। इसके बाद गले मिलने का दृश्य भी देखने को मिला। यह अपने आप में असाधारण था। मैंने इससे पहले चीन की कम्युनिस्ट पार्टी के किसी महासचिव को किसी दूसरे नेता को गले लगाते नहीं देखा था।

जाहिर है, यह सब पहले से ही तय था। लेकिन, यह बैठक के दौरान भी जारी रहा। एक बड़ी मेज के चारों ओर ट्रंप, पुतिन और शी जिनपिंग का बैठना भी प्रतीकात्मक था। गौर कीजिए कि बीच में कौन बैठा था: शी जिनपिंग। यहां चीन खुद को दुनिया के केंद्र के रूप में पेश कर रहा था, जो दुनिया को स्थिरता दे रहा है। वैश्विक स्तर पर चीन की स्थिति का यह सही चित्रण है या नहीं, यह अलग बात है, लेकिन शी जिनपिंग यही चाहते हैं कि दुनिया बीजिंग को इसी रूप में देखे। हालांकि, नीतिगत मोर्चे पर इस बैठक से कोई बड़ी उपलब्धि सामने नहीं आई। लेकिन, हमें यह जरूर पता चला कि इन तीनों नेताओं के दिमाग में क्या चल रहा था। मसलन, बैठक में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) में सुधार की जरूरत पर भी चर्चा हुई। इस मुद्दे पर तीनों नेता सहमत दिखे कि संगठन में बदलाव होने चाहिए। हालांकि, इसके पीछे उनकी मंशा अलग-अलग है। चीन संयुक्त राष्ट्र में अपनी भूमिका और प्रभाव बढ़ाना चाहता है, जबकि ट्रंप का इस संगठन से भरोसा लगातार कमजोर होता जा रहा है।

तीनों नेताओं ने एक ऐसे दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए, जिसमें परमाणु खतरों को कम करने के बारे में कुछ बातें और इरादे तो जताए गए, लेकिन ठोस वादे बहुत कम थे। दिलचस्प है कि यह पूरी चर्चा एक ऐसे विचार पर आधारित थी, जिसे सबसे पहले 1985 में अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन और सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचेव ने रखा था: 'परमाणु युद्ध जीता नहीं जा सकता, और इसे कभी लड़ा भी नहीं जाना चाहिए'। तीनों नेताओं ने इस विचार का समर्थन किया। हालांकि, परमाणु नियंत्रण को कैसे लागू किया जाएगा, इस पर कोई ठोस योजना नहीं थी। इससे जुड़ी मुख्य संधियां पहले ही खत्म हो चुकी हैं, और बीजिंग, जो परमाणु क्षमता के मामले में वाशिंगटन और मास्को से पीछे है, शायद इस मुद्दे पर अलग सोच रखता हो। एक अहम मुद्दा, जिस पर कोई ठोस चर्चा नहीं हुई, वह था इन तीनों देशों में से दो के क्षेत्रों में चल रहे युद्ध। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के संदर्भ में, इसका मतलब ईरान से है। ईरान में शुरू हुए संघर्ष को लगभग नौ महीने बीत चुके हैं, लेकिन वाशिंगटन इसे अभी तक खत्म नहीं कर पाया है। ईरान में युद्ध खत्म न कर पाना अमेरिका की ऐसी कमजोरी है, जिसे रूस और चीन शायद जल्दी खत्म नहीं करना चाहेंगे। वैसे भी, इस बैठक में दोनों में से कोई भी देश इस मामले में अमेरिका की मदद करने का अपना अहम हथियार छोड़ने को तैयार नहीं दिखा। यूरेशियाई क्षेत्र के दूसरे छोर पर यूक्रेन है। शिखर सम्मेलन में इसका नाम तक नहीं लिया गया। एक तो यह कि इस संघर्ष में तीनों नेता अलग-अलग पक्षों के साथ हैं, और दूसरा यह कि यूक्रेन के यूरोपीय सहयोगी वहां मौजूद नहीं थे। ऐसे में, अगर पुतिन और शी के साथ मिलकर ट्रंप यूक्रेन मुद्दे पर कोई नई बात कहते, तो यूरोप के लिए यह बड़ी बात होती। इन विवादों के अलावा, तीनों नेताओं के बीच एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के नियमन और महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति श्रृंखला जैसे विषयों पर भी कोई चर्चा नहीं हुई। लेकिन, इसका मतलब यह कतई नहीं है कि अमेरिका-चीन की आर्थिक प्रतिद्वंद्विता से जुड़े ये अहम मुद्दे द्विपक्षीय वार्ता में न उठाए गए हों। यह भी संभव है कि इन मुद्दों पर अधिक गोपनीय बातचीत हुई हो। इस बैठक को 'याल्टा-2' भी कहा जा रहा था। फरवरी, 1945 में हुए याल्टा सम्मेलन से इसमें थोड़ी समानताएं जरूर थीं, जिसमें तीन बड़े तत्कालीन नेता- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल, सोवियत संघ के जोसेफ स्टालिन और अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट एकसाथ बैठे थे। तब तीन बड़ी शक्तियों में ब्रिटेन था, चीन का कोई नामोनिशान नहीं था। इससे यह साफ पता चलता है कि पिछले 80 वर्षों में भू-राजनीति कितनी बदल गई है। इसके अलावा, 1945 में स्टालिन, रूजवेल्ट और चर्चिल सभी एक ही पक्ष में थे। वे युद्ध के साथी थे, पर 'शीत युद्ध' शुरू होने के साथ ही उनके रास्ते अलग होने लगे। यहां स्थिति बिल्कुल उलट हो सकती है। चीन और रूस साझेदार हैं, जबकि अमेरिका को उनका विरोधी माना जाता है। हो सकता है कि ट्रंप एक नया 'शीत युद्ध' शुरू करने के बजाय तनाव कम करना चाहते हों। लेकिन यदि रूस, चीन और अमेरिका एक नई व्यवस्था में साथ आना चाहते हैं, तो संभव है कि यूरोपीय देश भी इस पर अपनी बात जरूर रखना चाहेंगे।

हिंद-प्रशांत में चीन का बढ़ता प्रभाव, भारत के सामने कूटनीतिक चुनौती

अमेरिका ने यह तो कहा है कि शेन्जेन बैठक का उद्देश्य परमाणु हथियारों पर रोक लगाने के लिए तीनों देशों में सहमति बनाना है, जो आवश्यक भी है, क्योंकि ऐसा कोई समझौता उनमें नहीं है। आशंका यह भी है कि ट्रंप अब चीन और रूस के प्रति लचीली नीति अपना सकते हैं। यदि ऐसा हुआ, तो इसका असर क्वाड पर पड़ेगा ही, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भी यह धारणा निर्मित होगी कि ट्रंप की नजर अब इस क्षेत्र से हटकर दूसरे पर जा रही है।

चीन भारत-आसियान संबंध का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है, क्योंकि कई आसियान देश उस पर किसी न किसी वजह से निर्भर हैं और वे भारत के साथ अपने संबंध-विस्तार को 'बैलेंसिंग पावर' यानी शक्ति संतुलन के रूप में देखते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आसियान देशों को निराश नहीं किया। शिखर सम्मेलन में उन्होंने साफ-साफ कहा कि हमारा भविष्य 'कॉम्पिटिशन' (प्रतिस्पर्द्धा) से नहीं, 'को-ऑपरेशन' (सहयोग) से निर्धारित होना चाहिए। आसियान देश भारतीय प्रधानमंत्री की दृष्टि के अनुसार अपने संबंधों को कितना आकार दे पाते हैं, यह तो बाद में पता चलेगा, मगर 'क्वाड बैठक' पर सभी देशों की निगाहें बनी हुई थीं, जो स्वाभाविक ही थीं।

यह सही है कि अपने दूसरे कार्यकाल में राष्ट्रपति ट्रंप ने नीतियों में काफी फेरबदल की है। उन्होंने क्वाड के शेष तीनों देशों पर हद से अधिक टैरिफ लगाए, जिससे द्विपक्षीय संबंधों में खटास पैदा हुई। हालांकि, अमेरिकी विदेश विभाग हमेशा यही कहता रहा कि अमेरिका की क्वाड में दिलचस्पी बनी हुई है। इस साल इसके विदेश मंत्रियों की हुई तीनों बैठकों में भी (जिनमें से एक मई में नई दिल्ली में हुई थी) इस समूह की बुनियादी नीतियों को ही आगे बढ़ाने पर जोर दिया गया। क्वाड की बुनियादी नीतियां आखिर हैं क्या? दरअसल, यह समूह हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति बनाए रखने और समुद्री जहाजों की बेरोक-टोक आवाजाही का हिमायती है। याद रहे, अपने उत्थान के बाद चीन ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में कई ऐसे कदम उठाए हैं, जिनसे उसकी विस्तारवादी नीतियों का पता चलता है। चीन की 'बेल्ट ऐंड रोड इनीशिएटिव' (बीआरआई) का मुख्य उद्देश्य भी यही है। खासतौर से दक्षिण व पूर्वी चीन सागर के क्षेत्रों को वह अपना समझता रहा है। वह हिंद-प्रशांत में अपनी नौसैन्य ताकत बढ़ाकर पूरे समुद्री क्षेत्र पर प्रभाव जमाना चाहता है। क्वाड के देश इस सामरिक चुनौती से मुकाबिल हैं। हालांकि, एक सवाल यह भी है कि भारत को क्वाड से कितनी उम्मीदें पालनी चाहिए? खासतौर से यह देखते हुए कि बीते कुछ महीनों से राष्ट्रपति ट्रंप का चीन के प्रति रूख बदल गया है। क्या वह बीजिंग से सहयोग बढ़ाना चाहते हैं? क्या वह उससे ऐसा कोई समझौता करना चाहते हैं कि चीन हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाए और पश्चिमी गोलार्द्ध अमेरिका के लिए छोड़ दे? ये सवाल इसलिए मौजूं हो गए हैं, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप ने अपनी सामरिक नीति में पश्चिमी गोलार्द्ध पर खास जोर दिया है। इसी कारण उन्होंने जनवरी 2026 में वेनेजुएला पर सैन्य कार्रवाई करके उसके राष्ट्रपति को पत्नी समेत बंदी बना लिया था, क्योंकि वेनेजुएला के पास तेल का बड़ा भंडार है और वह चीन के साथ अपने संबंध बढ़ा रहा था।

जाहिर है, एक तरफ यह उम्मीद तो की जा सकती है, जिस पर अमेरिकी विदेश मंत्री ने हर बैठक में इशारा भी किया कि अमेरिका क्वाड को मजबूत बनाना चाहता है। चीन को हिंद-प्रशांत में मनमानी से रोकना चाहता है; और क्वाड देशों में 'क्रिटिकल मिनरल्स' या नई तकनीक में सहयोग करना चाहता है, तो दूसरी तरफ नजर इस बात पर भी बनी रहेगी कि आने वाले दिनों में जब राष्ट्रपति ट्रंप शेन्जेन में चीन और रूस के अपने समकक्षों से मिलेंगे, तब उस मुलाकात के बाद क्या संयुक्त बयान जारी किया जाता है?

अमेरिका ने यह तो कहा है कि शेन्जेन बैठक का उद्देश्य परमाणु हथियारों पर रोक लगाने के लिए तीनों देशों में सहमति बनाना है, जो आवश्यक भी है, क्योंकि ऐसा कोई समझौता उनमें नहीं है। आशंका यह भी है कि ट्रंप अब चीन और रूस के प्रति लचीली नीति अपना सकते हैं। यदि ऐसा हुआ, तो इसका असर क्वाड पर पड़ेगा ही, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भी यह धारणा निर्मित होगी कि ट्रंप की नजर अब इस क्षेत्र से हटकर दूसरे पर जा रही है। इसके कयास इसलिए भी अधिक हैं, क्योंकि ईरान युद्ध के दलदल से अमेरिका बाहर नहीं निकल सका है। मुमकिन है, ट्रंप चीन और रूस से मदद मांगें, किंतु इस सहयोग के लिए वह किस तरह की कीमत अदा करने को तैयार हैं? जाहिर है, भारत के सामने दुविधा यही है कि वह क्वाड को कितना महत्व दे? हमें यह समझना होगा कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में हमारे तमाम तरह के हित निहित हैं, जिनको हमें आगे बढ़ाना ही है। साथ ही, जापान और ऑस्ट्रेलिया से भी हमें अपने रिश्ते मजबूत करने होंगे। अच्छा होगा कि हम क्वाड की सदस्यता को गंभीरता से लें, पर ज्यादा महत्व इस क्षेत्र के देशों के साथ आपसी रिश्तों को दें। आसियान या प्रशांत द्वीप समूह मंच जैसे क्षेत्रीय संगठनों के साथ रिश्तों को आगे बढ़ाना भी समान रूप से जरूरी है। चीन की चुनौती का सामना भारत को खुद ही करना होगा। हां, प्रधानमंत्री मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच अच्छी वार्ताएं हुई हैं, लेकिन चीन, भारत को प्रतिद्वंद्वी ही मानता है और वह हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारतीय हितों की अनदेखी करेगा। लिहाजा, चीन के प्रति हमें सख्त नीतियां अपनानी होंगी। चीनी उत्पादों की भारतीय बाजार में बढ़ रही आमद को रोकना होगा, जिस पर यदि गंभीरता से काम न हुआ, तो आने वाले वर्षों में चीन को लेकर हमारी मुश्किलें बढ़ सकती हैं। भारत की कूटनीतिक सक्रियता के लिहाज से मंगलवार का दिन खास रहा। फिलीपींस की राजधानी मनीला में पहले आसियान शिखर सम्मेलन और फिर देर शाम जिस गंभीर माहौल में 'क्वाड' देशों के शासनाध्यक्षों की मुलाकात हुई, वह संकेत है कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र के आसपास अब विश्व की राजनीति सिमटने लगी है। क्वाड बैठक से पहले 'ओपेन मीटिंग' में चारों नेताओं ने 'आपसी सहयोग' बढ़ाने पर जो जोर दिया, उसके मौजूदा हालात में गहरे निहितार्थ हैं। गौरतलब है, क्वाड की यह बैठक 2025 में भारत में होनी थी, पर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की अप्रत्याशित व अस्थिर नीतियों के कारण ऐसा हो न सका। बहरहाल, इस 'आपसी सहयोग' का एक आधार चीन भी है। 'ओपेन मीटिंग' में भले ही उसका नाम नहीं लिया गया, पर शिखर बैठक में उसकी चर्चा जरूर हुई होगी। ऐसा इसलिए, क्योंकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की बढ़ती रणनीतिक-आर्थिक आक्रामकता चिंता पैदा करती है।

शिखर वार्ता के शोर में छिपे कूटनीति के अधूरे लक्ष्य

चीन के लोगों में एक कहावत बहुत प्रचलित है- गरजना खूब, पर बरसना नहीं। शिखर सम्मेलन का नतीजा बेशक फीका हो, लेकिन बयानबाजी और शोर-शराबे में कभी कमी नहीं की जाती। अक्सर शब्दों की बाजीगरी से यह तथ्य छिप जाता है कि कूटनीति एक लंबी और जटिल प्रक्रिया है। इसमें बड़े दावों से अधिक अहमियत धीरे-धीरे होने वाली प्रगति की होती है। जब दो देशों के नेता आपस में मिलते हैं, तो उनके बीच सौहार्द और गर्मजोशी की ही तस्वीरें आती हैं, पर शिखर वार्ता की सफलता का असली पैमाना यह है कि उसमें बुनियादी और अहम मुद्दों पर कितनी ठोस प्रगति हुई?

शेनझेन में खास यह रहा कि यहां तीन दिग्गज नेता एक साथ जुटे। इनमें से दो राष्ट्रपति (डोनाल्ड ट्रंप और व्लादिमीर पुतिन) युद्धों के कारण लगातार सुर्खियों में रहे हैं, जबकि तीसरे शासनाध्यक्ष (शी जिनपिंग) का जोर अगले दो वर्षों के भीतर ताइवान को चीन में मिलाने पर है। तीनों नेताओं की अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाएं हैं, जो सैन्य जरूरतों से गुंथी हुई हैं।

ट्रंप किसी कीमत पर इतिहास में एक पराजित नेता के रूप में दर्ज नहीं होना चाहते। उनकी कोशिश है कि रूस और चीन मिलकर ईरान पर दबाव डालें, ताकि वह उनकी शर्तें मानने को तैयार हो जाए और अमेरिकी राष्ट्रपति उसे अपनी जीत के रूप में पेश कर सकें। पुतिन की मंशा है कि यूक्रेन में रूस ने जिन इलाकों पर कब्जा कर लिया है, उसे अमेरिकी मान्यता मिल जाए। रूस सिर्फ कीव से नहीं लड़ रहा, बल्कि उसका टकराव समूचे यूरोप से है। अब फ्रांस, ब्रिटेन और नीदरलैंड पूरे दमखम से यूक्रेन का साथ दे रहे हैं, जबकि जर्मनी से उसे आर्थिक मदद मिल रही है। रही बात शी जिनपिंग की, तो उनके पास समय की बड़ी चुनौती है। उन्होंने अपनी पार्टी और देश के लोगों से वायदा किया है कि 2028 तक वह ताइवान को चीन में शामिल कर लेंगे, लेकिन इससे पहले उन्हें 2027 के पार्टी सम्मेलन में फिर से अपनी जीत सुनिश्चित करनी होगी। बेशक, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी में नेतृत्व के प्रति असहमति जताने की परंपरा नहीं है, लेकिन जिनपिंग को चौथी बार कार्यकाल हासिल करने के लिए कोई असाधारण उपलब्धि बतानी होगी, जो सिर्फ ताइवान हो सकती है।

ट्रंप पहले ही संकेत दे चुके हैं कि ईरान को लेकर उनकी मंशा पूरी नहीं होने वाली है। पत्रकारों से रूबरू होते हुए उन्होंने कहा कि ईरान को लेकर उन्हें रूस और चीन की जरूरत नहीं है। हालांकि, सच्चाई यह है कि उन्होंने ऐसा इसलिए कहा, क्योंकि वे इन दोनों देशों का साथ हासिल करने में विफल रहे हैं। ट्रंप ने एपेक शिखर सम्मेलन में उस महत्वपूर्ण मेहमान का कोई जिक्र नहीं किया, जिसकी गैर-मौजूदगी भी काफी सुर्खियों में रही। वह मेहमान उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन थे। उनकी संभावित मौजूदगी के लिए परमाणु निरस्त्रीकरण को बहाना बनाया गया था, क्योंकि इस शिखर सम्मेलन का मकसद एक अन्य दौर की 'साल्ट वार्ताएं' (सामरिक शस्त्र सीमा वार्ता) करना नहीं था, जिनके तहत 1972 और 1979 में परमाणु समझौते हुए थे। उत्तर कोरिया का मुद्दा चीन के एजेंडे में था। शी जिनपिंग चाहते हैं कि उत्तर कोरिया को एक परमाणु शक्ति संपन्न देश के रूप में अमेरिका मान्यता दे। इससे अमेरिका के खिलाफ उनका दूसरा मोर्चा खत्म हो जाएगा और वह ताइवान के खिलाफ अपनी पूरी ताकत व संसाधन झोंक सकेंगे।

पूर्वी एशिया और प्रशांत क्षेत्र के रणनीतिक समीकरणों को आखिरी बार बदलने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने साम्यवादी चीन को मान्यता देकर सोवियत संघ के खिलाफ पश्चिमी मोर्चे पर अपना ध्यान लगाया था। ट्रंप भी 21वीं सदी के निक्सन बन सकते थे, लेकिन अब वह अमेरिकी जनता को परमाणु शक्ति संपन्न उत्तर कोरिया के लिए शायद ही राजी कर सकेंगे, खासकर तब, जब तेहरान की परमाणु क्षमता को ही वह ईरान-युद्ध का कारण बताते रहे हैं।

शी जिनपिंग का ध्यान ताइवान पर होने से मुमकिन है कि जब तक यह मसला नहीं सुलझ जाता, तब तक बीजिंग हिमालयी क्षेत्र में यथास्थिति को बिगाड़ने से बचेगा। इसका मतलब है कि भारत को संभवत: अगले पांच वर्षों तक कुछ राहत मिल सकती है। इस अवधि का इस्तेमाल उसे भविष्य के हाईटेक युद्धों की तैयारी में बड़ी छलांग लगाने के लिए करना चाहिए।

उधर, राष्ट्रपति ट्रंप समझते हैं कि अमेरिकी सैन्य ताकत की भी अपनी सीमाएं हैं, लेकिन मुमकिन है कि इस सच को स्वीकार करने के लिए उन्हें सैन्य शक्ति का आखिरी दांव आजमाना पड़े। उनके सहयोगी इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू को भी किसी बड़ी रणनीति की जरूरत है, क्योंकि सत्ता पर लगातार कमजोर पड़ती पकड़ को मजबूत बनाने का एकमात्र रास्ता नए सिरे से युद्ध छेड़ना है।

पश्चिम एशिया में अमेरिकी ताकत की जो तस्वीर कभी काफी प्रभावशाली नजर आती थी, वह अब ईरान द्वारा कई मोर्चों पर किए गए जवाबी हमलों से धुंधली पड़ गई है। इन सबसे इजरायल की विश्वसनीयता पर भी गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। ट्रंप ने मध्यावधि चुनावों में रिपब्लिकन पार्टी की हार की एक बड़ी वजह अमेरिकी मतदाताओं के बीच इजरायल की घटती लोकप्रियता को बताया है। हाउस में डेमोक्रेटिक पार्टी के नए स्पीकर हकीम जेफ्रीज भी चाहते हैं कि अमेरिका अपनी इजरायल नीति की नए सिरे से समीक्षा करे। ट्रंप ने इजरायल को मिलने वाली सालाना चार अरब डॉलर की सहायता भी रोक दी है। अमेरिकी जखीरे पर भी सवाल उठने लगे हैं, क्योंकि केशम द्वीप पर हालिया बमबारी के दौरान अमेरिकी नौसेना कथित तौर पर ऐसे मिसाइलों का इस्तेमाल कर रही थी, जो बेकाम थीं। इस तरह देखें, तो त्रिपक्षीय वार्ता की मेज पर बैठने वाले तीनों देशों में चीन ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसके पास अभी मजबूत और जरूरत पड़ने पर तुरंत इस्तेमाल की जा सकने वाली सैन्य ताकत है। इसकी वजह यह है कि उसने अब तक अपनी इस ताकत का उपयोग नहीं किया है। हालांकि, सैन्य शक्ति केवल संचित करने के लिए नहीं होती। अगर शी जिनपिंग 21वीं सदी का माओत्से तुंग बनना चाहते हैं, तो उनको निकट भविष्य में ताइवान (जिसका अस्तित्व अब तक अमेरिकी सैन्य समर्थन के कारण बना हुआ है) की चुनौती का सामना करने के लिए जरूरी जोखिम उठाने ही होंगे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 'विकसित राजस्थान' के विजन का साक्षी बन रहा राजस्थान पवेलियन: हस्तशिल्प, निवेश, पर्यटन एवं नवाचारों का एक मंच पर प्रदर्शन

आईआईटीएफ में राजस्थान के 'विकास और विरासत' का आकर्षक संगम

जयपुर (कासं)। नई दिल्ली में आयोजित हो रहे 45वें भारतीय अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में राजस्थान पवेलियन प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, हस्तशिल्प, औद्योगिक क्षमताओं, निवेश संभावनाओं एवं आधुनिक तकनीकी नवाचारों का आकर्षक प्रदर्शन कर रहा है। इस आयोजन में राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड द्वारा प्रगति मैदान के हॉल संख्या-3 के ग्राउंड फ्लोर पर लगभग एक हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में स्थापित पवेलियन अब तक करीब एक लाख आगंतुकों का स्वागत कर चुका है। पार्टनर स्टेट के रूप में राजस्थान इस वर्ष भी मेले में सहभागी है।

इस मंच के माध्यम से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 'विकसित राजस्थान' के विजन को मुख्य रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है। राजस्थान पवेलियन में प्रदेश के 41 जिलों के ओडीओपी उत्पादों एवं 24 जीआई टैग उत्पादों को प्रदर्शित किया गया है। वहीं, 44 स्टॉलों के माध्यम से शिल्पकारों, उद्यमियों, उत्पाद निर्माताओं एवं महिला स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों के प्रदर्शन और विपणन का अवसर प्रदान किया गया है।





मेले की थीम 'विकास और विरासत' के अनुरूप पवेलियन में राजस्थान की पारंपरिक कला, संस्कृति एवं शिल्प को आधुनिक तकनीक, उद्योग, निवेश और विकास की संभावनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया है। आकर्षक 'पीकॉक गेट' एवं 'नमस्ते गेट', एआई आधारित डिजिटल झरोखा, कठपुतली कियोस्क, सेल्फी झरोखा और 3डी प्रिंटिंग जैसी तकनीकी प्रस्तुतियां आगंतुकों के विशेष आकर्षण का केंद्र हैं।

आईआईटीएफ-2026 में राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन, हस्तशिल्प एवं विकास की संभावनाओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए व्यापक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के समन्वित प्रयासों से राजस्थान की कला, संस्कृति, पारंपरिक शिल्प, पर्यटन एवं समकालीन विकास की विविध विशेषताओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय आगंतुकों के समक्ष प्रभावी रूप से प्रदर्शित किया जा रहा है, जिससे राजस्थान पवेलियन की प्रस्तुतियां और सांस्कृतिक आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो रहे हैं। विभिन्न विभागों एवं संस्थाओं की प्रदर्शनियों में राजस्थान की अक्षय ऊर्जा, कौशल विकास, पर्यटन, औद्योगिक निवेश एवं रोजगार संभावनाओं को रेखांकित किया गया है। लाइव डेमो के माध्यम से मोलेला टेराकोटा, बगरू ब्लॉक प्रिंटिंग, मेहंदी, टाई एंड डाई, पारंपरिक दरी निर्माण एवं 3डी प्रिंटिंग का अनुभव भी आगंतुकों को कराया जा रहा है। प्रतिदिन आयोजित हो रहे कच्ची घोड़ी एवं कालबेलिया नृत्य, सारंगी वादन, कठपुतली शो और पारंपरिक बायोस्कोप राजस्थान की लोक संस्कृति को जीवंत बना रहे हैं। इसके साथ ही राजस्थानी व्यंजनों से सजे फूड कोर्ट एवं हॉर्स शो एरिया में स्थापित वीआईपी लाउंज-कम-टूरिज्म इन्फॉर्मेशन सेंटर आगंतुकों को प्रदेश के खानपान एवं पर्यटन की जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं।

ब्लड प्रेशर लो होने पर कैसे करें बच्चे की देखभाल



लो ब्लड प्रैशर की समस्या पहले केवल बड़े बुजुर्गों को ही होती थी। मगर आजकल यह छोटे बच्चों में देखने को मिल रही है। बड़े तो अपनी समस्या को बोल कर बता सकते हैं लेकिन छोटे बच्चे की परेशानियों को समझना थोड़ा मुश्किल होता है। ऐसे में माता- पिता की जिम्मेदारी बनती है कि लो ब्लड प्रेशर के कारणों को जानें कर बच्चों को इससे बचाएं।

बच्चों में निम्न रक्तचाप के कई कारण हो सकते हैं। आज हम आपको उन्हीं कारणों और लक्षणों के बारे में बताएंगे। इनको जानकर आप बच्चों को इस बीमारी से बचा सकते हैं।

बच्चों ब्लड प्रैशर लो होने के कारण

1. बच्चे को किसी तरह का इंफेक्शन होना
2. बच्चे की मां द्वार प्रेगनेंसी में खाई गई दवाइयां
3. बच्चे का जरूरत से ज्यादा कमजोर होना
4. श्वसन संबंधी परेशानियां
5. प्रसव के दौरान मां का ज्यादा खून बहना
6. अचानक नवजात के माहौल में आया परिवर्तन
7. मां का ब्लड प्रैशर लो होना भी एक कारण हो सकता है

लक्षण

1. सांस लेने की गति तेज होना
2. बुखार आना
3. बच्चे के हाथ -पैर ठंडे पडना
4. आंखे लाल होना
5. त्वचा का पीला पड़ना

जब भी बच्चे में ऐसे लक्षण दिखाई दें तो इन्हें नजरअदांज न करें।

इस तरह करें उपचार

बच्चे का ब्लड प्रैशर लो होने की स्थिति में उसको तुंरत डॉक्टर के पास ले कर जाएं। खुद से बच्चे का कोई चीज खाने को न दें। ऐसा करने से उसकी तबीयत और खराब हो सकती है। बच्चे को निम्न रक्तचाप से बचाने के लिए डॉक्टर्स की देखरेख में ही रखना चाहिए, जिससे उसको होने वाले अन्य संक्रमण और बीमारी से बचाया जा सकता है।

मां का ब्लड प्रैशर सही रखें की कोशिश करें

बच्चे को बीमारियां उसकी मां से ही लगती हैं। मां जितनी स्वस्थ और सेहतमंद होगी बच्चा भी उतना ही हष्ट-पुष्ट होगा। प्रेगनेंसी के पहले तीन हफ्तों में लो ब्लड प्रैशर की समस्या होती है। इस दौरान मॉर्निंग सिकनेस और वोमिटिंग हो सकती है।

बच्चों को ये काम करने से कभी न रोके, करेंगे नई चीजों का अनुभव

अजीबोगरीब चीजें खाना

कई बार बच्चे अजीबो-गरीब चीजें खाने की जिद् करते है लेकिन पेरेंट्स उन्हें डांट देते है। इसकी बजाए बच्चों को कभी-कभार नई चीजों का भी एक्सपीरियंस दें।

गंदगी में खेलना

अपने बच्चों को पार्क में जाकर उन्हें मिट्टी में खेलने और कपड़ों को गंदा करने दें। इससे वो जिदंगी इन चीजों का अनोखा अनुभव करेंगे, जोकि उनके विकास में मदद करेगा।

पालतू जानवरों को प्यार

छोटे बच्चों को अक्सर जानवरों से खेलने का शौक होता है लेकिन पेरेंट्स उन्हें इनके साथ खेलने से रोक देते है। इसकी बजाए आप बच्चों को जानवरों के साथ खेलने दें। इससे उन्हें शांति तो मिलेगी साथ ही वो हर चीज से प्यार करना भी सीखेंगे।

स्नान न करना

कई बार बच्चे स्नान करने में आनाकानी करते है लेकिन पेरेंट्स उन्हें हमेशा अच्छे और खूशबूदार बनाकर रखना चाहते है। मगर इसकी बजाए कबी-कभार बच्चों को न नहाने देने से कुछ नहीं होगा बल्कि ऐसा करने से उनकी इम्यूनिटी बढ़ेगी।

गड़बड़ करना

बच्चों को रंगों से खेलना बहुत पसंद होता है। इसके लिए बच्चे कई बार टीशर्ट या कोई चीज गंदी भी कर देते है। ऐसा करने पर उन्हें डांटे नहीं। क्योंकि ऐसी करने से बच्चों की सोचने की शक्ति और भी बढ़ती है और वो ज्यादा क्रिएटिविटी दिखाते है।

2 से 6 साल की उम्र के बीच जो खिलाएंगे नन्हे को, वही भाएगा

उसे जीवनभर





छोटे बच्चों में आजकल मोटापा, टाइप टू-डायबिटीज, अस्थमा, आंख व हृदय संबंधी रोग, थकान और जोड़ों में दर्द जैसी समस्याएं आमतौर पर देखने को मिल रही हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि ये समस्याएं बच्चों की खानपान की गलत आदतों का नतीजा हैं। हाल ही विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में भी मोटापा बढ़ने का कारण बाजार में आसानी से उपलब्ध रेडीमेड खाद्य पदार्थों को बताया गया है।

प्रमुख वजह

आजकल बच्चों को घर में बने खाने की बजाय बाहर के जंक फूड, आइसक्रीम और चॉकलेट आदि ज्यादा पसंद आते हैं। रोजाना के खानपान से जितनी कैलोरी ली जा रही है, उसे शरीर खर्च नहीं पा रहा है और बच्चों को कम उम्र में ही रोग घेरने लगे हैं। दूसरा कारण आजकल बच्चों में शारीरिक गतिविधियों का अभाव है। मोबाइल फोन, कम्प्यूटर, लैपटॉप और टीवी की लत ने बच्चों को खेल के मैदान से दूर कर दिया है। आउटडोर गेम्स में उनकी कोई रुचि नहीं जबकि स्मार्टफोन पर घंटो खेलना उन्हें बेहद पसंद आता है।

साथ में समय बिताएं

बच्चों के साथ अधिक से अधिक क्वलिटी टाइम बिताएं। उन्हें सामने बैठकर खाना खिलाएं। आउटडोर गेम्स के लिए प्रेरित करें। माता-पिता बच्चे के टीवी, लैपटॉप या कम्प्यूटर के इस्तेमाल का समय तय करें। बच्चों को खेल-कूद में भाग लेने के लिए प्रेरित करें। साथ ही समय मिलने पर खुद भी उनके साथ खेलें। खानपान व व्यायाम के अलावा माता-पिता का सपोर्ट भी जरूरी होता है।

माता-पिता रखें ध्यान



बच्चों को किसी भी तरह की आदत 2-6 वर्ष के बीच लगती है। इस बीच माता-पिता बच्चों को जो कुछ भी खिलाते हैं उसका स्वाद उन्हें जीवनभर भाता है। बचपन से ही हरी सब्जियां, फल, दूध व अन्य प्रकार की पौष्टिक चीजें खाने की आदत डालें।

उम्र के हिसाब से क्या और कैसे खिलाएं

नवजात से 1 वर्ष तक : इस उम्र में बच्चे का विकास काफी तेजी से होता है। ऐसे में छह माह तक तो बच्चे को मां का दूध ही देना चाहिए। इसके बाद उसे दाल का पानी, दलिया और जूस आदि देना चाहिए।

1-2 वर्ष : इसमें बच्चे के विकास की दर 0-1 साल की तुलना में कम होती है। ऐसे में बच्चे के साथ जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए। बच्चा जितना खाए उतना ही खिलाना चाहिए। बच्चे को दूध, केला, दलिया व साबूदाने की खीर आदि दे सकते हैं।

2-5 वर्ष : इस उम्र में बच्चा जो खाना चाहता है और जितना खाना चाहता है उससे 30 प्रतिशत तक अधिक खिलाएं। दिन में तीन बार संपूर्ण आहार जैसे खिचड़ी, सूजी का हलवा, हरी सब्जियां, दाल व चावल आदि दें और दो बार हल्का भोजन जैसे फल व फलों का जूस, केला और साबूदाने की खीर आदि खिला सकते हैं।

बच्चों को कैल्शियम की ज्यादा जरुरत



5-10 वर्ष : उम्र के इस पड़ाव में बच्चों को कैल्शियम की ज्यादा जरूरत होती है। तीन बार (नाश्ता, दोपहर का खाना व रात का खाना) संपूर्ण आहार व दो बार हल्का भोजन दें। डाइट में दूध, चीज, फल, सूप, जूस, हरी सब्जियां, पनीर, दही व छाछ आदि को शामिल करें।

10-15 वर्ष : इस उम्र में बच्चों का काफी तेजी से विकास होता है। साथ ही उनमें खून की कमी होने का खतरा बना रहता है इसलिए उनके भोजन में आयरन, हाई कैलोरी व प्रोटीनयुक्त चीजों को शामिल करें। ऐसे में पालक, चुकंदर, सेब, दालें, पनीर, छाछ, दही, दूध, जूस व अंकुरित अनाज लाभकारी होते हैं।

'अब और मजबूत होगी जयपुर पुलिस की गश्त व्यवस्था' जयपुर पुलिस को मिले 10 नए पेट्रोलिंग वाहन

कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ और पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल ने फ्लैग ऑफ कर वाहनों को किया रवाना, पुलिस थाना करधनी (पश्चिम) से हुआ फ्लैग ऑफ, झोटवाड़ा क्षेत्र के 10 थानों को मिले नए वाहन





जयपुर (कासं)। जयपुर पुलिस की गश्त व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रभावी बनाने के उद्देश्य से रविवार को पुलिस थाना करधनी (पश्चिम) परिसर में 10 नए पेट्रोलिंग वाहनों का फ्लैग ऑफ समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ एवं पुलिस कमिश्नर जयपुर सचिन मित्तल ने फ्लैग ऑफ कर 10 नए पेट्रोलिंग वाहनों को रवाना किया। मंत्री कर्नल राठौड़ ने कहा कि अपराध नियंत्रण में जयपुर पुलिस द्वारा सराहनीय कार्य किया जा रहा है। झोटवाड़ा विधानसभा क्षेत्र के 10 थानों को पेट्रोलिंग वाहन उपलब्ध कराए गए हैं।

उन्होंने कहा कि पुलिस की कार्यक्षमता बढ़ाने और आमजन को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाना हमारी प्राथमिकता है। पुलिस और आमजन के बीच बेहतर समन्वय एवं सहयोग से क्षेत्र में कानून-व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

जयपुर पुलिस कमिश्नर सचिन मित्तल ने कहा कि नए पेट्रोलिंग वाहनों से विभिन्न थाना क्षेत्रों में पुलिस की गश्त व्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

इससे पुलिस की क्षेत्र में निगरानी, अपराध नियंत्रण तथा आपात परिस्थितियों में त्वरित पुलिस सहायता उपलब्ध कराने की क्षमता में भी वृद्धि होगी। कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस आयुक्त, कानून एवं व्यवस्था डॉ. अजय सिंह, अतिरिक्त पुलिस आयुक्त (यातायात एवं प्रशासन) प्रदीप मोहन शर्मा, उपायुक्त (पश्चिम) प्रशांत किरण, सहित जयपुर पश्चिम जिले के अधिकारी एवं कार्मिक मौजूद रहे।

एक राज्य, एक चुनाव' की भावना के अनुरूप राजस्थान के निर्वाचन प्रबंधन की सराहना

मुख्य सचिव ने राज्य निर्वाचन आयुक्त से की शिष्टाचार भेंट



जयपुर (कासं)। मुख्य सचिव वी. श्रीनिवास ने रविवार को शासन सचिवालय स्थित राज्य निर्वाचन आयोग कार्यालय में राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह से शिष्टाचार भेंट की। उन्होंने नगरीय निकाय एवं पंचायतीराज चुनावों की अब तक की प्रक्रिया के सफल, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण संचालन और निर्वाचन प्रबंधन में किए गए नवाचारों के लिए सिंह तथा आयोग की टीम को बधाई दी। भेंट के दौरान 'एक राज्य, एक चुनाव' की व्यापक अवधारणा के संदर्भ में प्रदेश के निर्वाचन अनुभवों पर चर्चा हुई।

राजस्थान में 'एक राज्य, एक चुनाव' के तहत नगरीय निकाय चुनाव दो चरण तथा पंचायतीराज चुनाव चार चरणों में आयोजित किए गए। इस व्यवस्था से मतदान केंद्रों पर पर्याप्त सुरक्षा बलों की उपलब्धता और प्रशासनिक संसाधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने में सहायता मिली। नगरीय निकाय चुनावों में मतदान पिछली बार के 71.84 प्रतिशत से बढ़कर 73.56 प्रतिशत रहा। ग्राम पंचायत चुनावों में यह 82.86 से बढ़कर 83.72 प्रतिशत तथा जिला परिषद एवं पंचायत समिति चुनावों में 63.66 से बढ़कर 67.78 प्रतिशत रहा।

मतदाता जागरूकता के लिए 'एक शाम लोकतंत्र के नाम' और 'एक दीप लोकतंत्र के नाम' जैसे कार्यक्रमों के साथ निबंध, काव्यपाठ, रंगोली तथा मतदाता संवाद आयोजित किए गए। निर्वाचन प्रबंधन में तकनीक के उपयोग के तहत दौसा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित 'दौसा बॉट' ने 1,142 अधिकारियों एवं कर्मचारियों के 16,762 प्रश्नों के उत्तर उपलब्ध कराए। जयपुर में वाहन अनुमति की ऑनलाइन व्यवस्था, चूरू एवं राजसमंद में वेबसाइट और क्यूआर कोड से निर्वाचन सामग्री की उपलब्धता तथा अभ्यर्थियों को नामांकन से पहले आवश्यक दस्तावेजों और प्रक्रियाओं का प्रशिक्षण देने जैसे नवाचार अपनाए गए।

प्रधानमंत्री देश में और मुख्यमंत्री राजस्थान में रामायण फिल्म को टैक्स फ्री करें- खाचरियावास

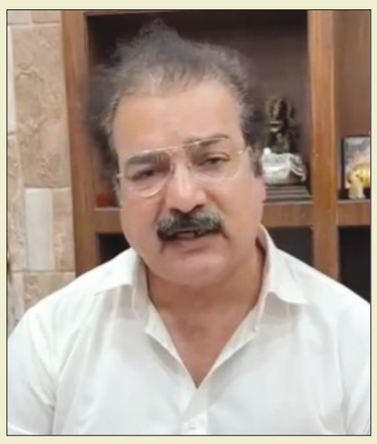

जयपुर (कासं)। पूर्व मंत्री एवं कांग्रेस नेता प्रताप सिंह खाचरियावास ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से रामायण फिल्म को पूरे देश में तथा राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से राजस्थान में टैक्स फ्री करने की मांग करते हुए कहा कि भगवान श्रीराम हम सबके आदर्श, आस्था और संस्कारों के प्रतीक हैं। रामायण जैसे महान विषय पर बनी फिल्म को देश के प्रत्येक नागरिक तक पहुंचना चाहिए। सरकार को इस फिल्म को टैक्स फ्री करने के साथ-साथ स्कूली बच्चों को भी यह फिल्म निशुल्क दिखाने की व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि नई पीढ़ी भगवान श्रीराम के आदर्शों, मर्यादा, त्याग और संस्कारों से प्रेरणा ले सके। खाचरियावास ने कहा कि भाजपा चुनाव और वोट की राजनीति के समय भगवान श्रीराम का नाम लेकर जनता की भावनाओं से खेलने का काम करती है, लेकिन जब भगवान श्रीराम के आदर्शों को जन-जन तक पहुंचाने का अवसर आता है तो भाजपा सरकार पीछे हट जाती है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा कंगना रनौत की फिल्म को टैक्स फ्री कर सकते हैं, लड़ाई-दंगे वाली फ़िल्म भी फ्री कर सकते है लेकिन रामायण जैसी फिल्म को टैक्स फ्री करने की पहल क्यों नहीं कर रहे? यह भाजपा की दोहरी राजनीति और दोहरे चरित्र को दर्शाता है। उन्होंने कहा रामायण केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि हमारे संस्कार, संस्कृति, मर्यादा, त्याग, सत्य और आदर्शों का प्रतीक है। भगवान श्रीराम करोड़ों देशवासियों की आस्था के केंद्र और हम सबके आदर्श हैं। रामायण के आदर्श प्रत्येक घर, प्रत्येक परिवार और प्रत्येक बच्चे तक पहुंचने चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पूरे देश में रामायण फिल्म को टैक्स फ्री करें तथा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा राजस्थान में तत्काल इस फिल्म को टैक्स फ्री घोषित करें और स्कूलों के बच्चों को भी इसे निशुल्क दिखाने की व्यवस्था करें। खाचरियावास ने कहा कि भाजपा को भगवान श्रीराम के नाम पर राजनीति करने के बजाय उनके आदर्शों को जीवन में उतारने और जन-जन तक पहुंचाने के लिए ईमानदारी से काम करना चाहिए।

पंचायत चुनावों में हार के कारण तलाशेगी भाजपाः शेखावत



जयपुर। राजस्थान में पंचायत चुनाव के नतीजों को केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने भाजपा के लिए आत्मावलोकन का अवसर बताया है। शेखावत ने कहा कि डबल इंजन सरकार होने के बावजूद पंचायत चुनावों में अपेक्षित परिणाम नहीं मिलना भारतीय जनता पार्टी के लिए आत्मावलोकन का अवसर है। उन्होंने कहा कि पार्टी इस बात का आकलन करेगी कि केंद्र सरकार की योजनाओं और विकास कार्यों का लाभ जनता तक पहुंचाने में कहां कमी रही और और सरकार के कामकाज का संदेश आम लोगों तक प्रभावी ढंग से क्यों नहीं पहुंच पाया। चुनाव परिणामों के आधार पर इन कमियों की समीक्षा की जाएगी। यह समीक्षा केवल प्रदेश स्तर पर नहीं, बल्कि जमीनी स्तर, जिला स्तर और निर्वाचन क्षेत्र के स्तर पर भी की जाएगी। इसके बाद जयपुर में भी इस पर विस्तृत मंथन होगा। रविवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय और एयरपोर्ट पर मीडिया से बातचीत करते हुए शेखावत ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी ऐसी पार्टी है, जो चुनाव में जीत मिलने पर भी और हार होने पर भी समान रूप से परिणामों की समीक्षा करती है। पार्टी के कार्यकर्ता और नेता किसी चुनावी परिणाम से निराश होकर बैठने वाले नहीं हैं। भाजपा का राजनीतिक सफर दो सीटों से शुरू होकर पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने तक पहुंचा है। ऐसे में किसी एक चुनाव का परिणाम पार्टी के आत्मविश्वास और संकल्प को प्रभावित नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि भाजपा के लिए चुनावी नतीजे केवल जीत और हार का आंकड़ा नहीं होते, बल्कि उनसे सीख लेकर आगे की रणनीति तैयार करने का अवसर भी मिलता है।

बाड़ा पदमपुरा में जुटेंगे कांग्रेस के दिग्गज, 10 दिन तक चलेगा प्रशिक्षण शिविर

खड़गे करेंगे उद्घाटन, राहुल गांधी होंगे समापन सत्र में शामिल

जयपुर (कासं)। जयपुर के बाड़ा पदमपुरा में 10 दिन तक कांग्रेस के नए राष्ट्रीय सचिवों का ट्रेनिंग कैंप होगा। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे 30 नवंबर को ट्रेनिंग कैंप का उद्घाटन करेंगे। वहीं समापन सत्र में 9 दिसंबर को राहुल गांधी शामिल होंगे। जयपुर ट्रेनिंग कैंप में खड़गे और राहुल गांधी के आने का कार्यक्रम फाइनल किया जा चुका है। कैंप में कांग्रेस के कई दिग्गज नेता नए राष्ट्रीय सचिवों को 10 दिन तक ट्रेनिंग देंगे। कांग्रेस ने 19 नवंबर को ही 81 नए राष्ट्रीय सचिव नियुक्त किए हैं। इसमें नए राष्ट्रीय सचिवों को राज्यों में सह-प्रभारी की जिम्मेदारी दी है। अब इन नए राष्ट्रीय सचिवों को खड़गे और राहुल गांधी के अलावा दिग्गज नेता ट्रेनिंग देंगे। बाड़ा पदमपुरा में ट्रेनिंग कैंप के लिए कांग्रेस ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। ट्रेनिंग कैंप की तैयारियों का जायजा लेने के लिए कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल 25 नवंबर को जयपुर आएंगे। बाड़ापदमपुरा में पहले भी कांग्रेस के राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर के ट्रेनिंग कैंप हो चुके हैं। साल 2003 में कांग्रेस का तीन दिन का नेशनल ट्रेनिंग कैंप हुआ था। उस समय सोनिया गांधी सहित सभी वरिष्ठ नेता शामिल हुए थे। कांग्रेस के प्रादेशिक स्तर के कई ट्रेनिंग कैंप भी यहां होते रहे हैं। कांग्रेस में नए पदाधिकारियों को राज्यों में जिम्मेदारी संभालने से पहले ट्रेनिंग देने का नया प्रयोग शुरू किया गया है। कांग्रेस ट्रेनिंग सेल हर साल कांग्रेस नेताओं के अलग-अलग कैंप लगाती रही है। 10 दिन तक चलने वाले इस कैंप में राष्ट्रीय सचिवों को संगठन को मजबूत करने से लेकर कांग्रेस के पक्ष में सियासी नरेटिव तैयार करने की ट्रेनिंग दी जाएगी।



जयपुर प्रथम जिले में हुआ उप-राष्ट्रीय पल्स पोलियो टीकाकरण दिवस का आगाज

सीएमएचओ डॉ. रवि शेखावत ने शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र महेश नगर पर बच्चों को पोलियो की दवा पिलाकर की टीकाकरण दिवस की शुरुआत, 4 लाख 61 हजार 578 बच्चों को पिलाई जाएगी पोलियो की खुराक



जयपुर (कासं)। जयपुर प्रथम जिले में रविवार, 22 नवंबर को उप-राष्ट्रीय पल्स पोलियो टीकाकरण दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयपुर प्रथम डॉ. रवि शेखावत ने शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (यूपीएचसी) महेश नगर पर नन्हे-मुन्ने बच्चों को पोलियो की दो बूंद पिलाकर टीकाकरण दिवस का शुभारंभ किया। इस दिवस के तहत जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में बनाए गए 4164 बूथों पर 0 से 5 वर्ष तक के 04 लाख 61 हजार 578 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जा रही है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी जयपुर प्रथम डॉ. रवि शेखावत ने बताया कि जिले में टीकाकरण दिवस के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूर्ण की गई हैं। निर्धारित बूथों पर प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मियों, एएनएम, आशा सहयोगिनियों एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाई जा रही है। जिले में 0 से 5 वर्ष तक के 04 लाख 61 हजार 578 बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने सभी पात्र बच्चों को पोलियो की दो बूंद अवश्य पिलाएं। जिला प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी (आरसीएचओ) जयपुर प्रथम डॉ. महेश चौधरी ने बताया कि बूथ दिवस के बाद आगामी दिनों में जयपुर प्रथम जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में मोबाइल टीमें घर-घर जाकर खुराक लेने से वंचित रह गए बच्चों को पोलियो की खुराक पिलाएंगी। टीकाकरण दिवस की प्रभावी निगरानी के लिए जिले में 790 सुपरवाइजर नियुक्त किए गए हैं।

न्यूज इनबॉक्स

सिंधी संस्कृति की आध्यात्मिक पहचान है दरिया पूजन : देवनानी

जयपुर (कासं)। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने रविवार को दीव में सिंधी समाज (ऊना) द्वारा आयोजित वर्ल्ड सिंधी मेला-2026 के अंतर्गत आईएनएस खुकरी मेमोरियल में आयोजित पूजा बेहराणा साहिब कार्यक्रम में सहभागिता की। इस अवसर पर उन्होंने विधि-विधान के साथ दरिया पूजन कर भगवान झूलेलाल के प्रति श्रद्धा व्यक्त की तथा सिंधी समाज की समृद्ध आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जुड़े आयोजन में भाग लिया। कार्यक्रम में भगवान झूलेलाल साहिब के समक्ष पारंपरिक छेज़ के साथ भक्ति संगीत एवं गीतों की प्रस्तुतियां दी गईं। देवनानी ने उपस्थित श्रद्धालुओं एवं समाजबंधुओं के साथ इस सांस्कृतिक आयोजन में सहभागिता की। भारत के विभिन्न क्षेत्रों तथा विदेशों से आए सिंधी समाज के लोगों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। पारंपरिक वेशभूषा, लोकगीतों, संगीत और सामूहिक छेज़ ने आयोजन को विशिष्ट सांस्कृतिक स्वरूप प्रदान किया। इस अवसर पर समाज एवं विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाले विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान भी किया गया।

पांच बूथों पर पुनर्मतदान शांतिपूर्ण संपन्न

जयपुर (कासं)। पंचायतीराज आम चुनाव के तहत ईवीएम में तकनीकी खराबी के कारण जयपुर जिले के पांच मतदान केंद्रों पर रविवार को पुनर्मतदान शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। इनमें जिला परिषद के दो तथा पंचायत समिति दूदू, शाहपुरा एवं चौमूं के एक-एक मतदान केंद्र शामिल रहे। जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) संदेश नायक ने बताया कि जिला परिषद के निर्वाचन क्षेत्र संख्या 13 के बूथ संख्या 60 एवं निर्वाचन क्षेत्र संख्या 52 के बूथ संख्या 81 पर पुनर्मतदान करवाया गया। निर्वाचन क्षेत्र संख्या 13 में कुल 812 मतदाताओं में से 661 ने मतदान किया, जो 81.40 प्रतिशत रहा। निर्वाचन क्षेत्र संख्या 52 में 984 मतदाताओं में से 732 ने मताधिकार का प्रयोग किया, जो 74.39 प्रतिशत है। इस प्रकार जिला परिषद के दोनों निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 1,796 मतदाताओं में से 1,393 ने मतदान किया तथा कुल मतदान प्रतिशत 77.56 रहा। इसी प्रकार पंचायत समिति दूदू के निर्वाचन क्षेत्र संख्या 06 के बूथ संख्या 62, शाहपुरा के निर्वाचन क्षेत्र संख्या 06 के बूथ संख्या 34 तथा चौमूं के निर्वाचन क्षेत्र संख्या 25 के बूथ संख्या 142 पर पुनर्मतदान हुआ। चौमूं में 1,013 मतदाताओं में से 764 ने मतदान किया, जो 75.42 प्रतिशत रहा। दूदू में 763 मतदाताओं में से 648 ने मतदान किया, जो 84.93 प्रतिशत तथा शाहपुरा में 964 मतदाताओं में से 544 ने मतदान किया, जो 56.43 प्रतिशत रहा। तीनों पंचायत समितियों में कुल 2,740 मतदाताओं में से 1,956 ने मतदान किया तथा कुल मतदान प्रतिशत 71.39 दर्ज किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी ने पुनर्मतदान प्रक्रिया को शांतिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न कराने में सहयोग देने वाले मतदाताओं, निर्वाचन अधिकारियों, मतदान दलों, पुलिसकर्मियों एवं अन्य कार्मिकों का आभार व्यक्त किया।

कोटा स्टेशन के विकास कार्य से रेल यातायात प्रभावित, चार रेलसेवाएं डायवर्ट

जयपुर (कासं)। रेलवे द्वारा कोटा स्टेशन के पुनर्विकास कार्य के अंतर्गत प्लेटफॉर्म संख्या 2 पर विकास कार्य किया जा रहा है। इस कार्य के लिए 23 नवम्बर 2026 से 7 दिसम्बर 2026 तक 15 दिनों का ब्लॉक लिया जा रहा है। इसके चलते रेलवे द्वारा चार रेलसेवाओं का मार्ग परिवर्तित करने का निर्णय लिया गया है। साथ ही, यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए इन रेलसेवाओं को कोटा स्टेशन के स्थान पर सोगरिया स्टेशन पर अस्थाई ठहराव दिया जाएगा। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमित सुदर्शन ने बताया कि गाड़ी संख्या 14814, भोपाल-जोधपुर एक्सप्रेस रेलसेवा 23 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2026 तक भोपाल से प्रस्थान कर परिवर्तित मार्ग सोगरिया-कोटा सी केबिन-गुरला होकर संचालित होगी। इस दौरान रेलसेवा का सोगरिया स्टेशन पर रात्रि 02.10 बजे आगमन एवं 02.20 बजे प्रस्थान होगा। गाड़ी संख्या 14813, जोधपुर-भोपाल एक्सप्रेस रेलसेवा 23 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2026 तक जोधपुर से प्रस्थान कर परिवर्तित मार्ग गुरला-कोटा सी केबिन-सोगरिया होकर संचालित होगी। इस दौरान रेलसेवा का सोगरिया स्टेशन पर रात्रि 23.30 बजे आगमन एवं 23.40 बजे प्रस्थान होगा। गाड़ी संख्या 12181, जबलपुर-अजमेर एक्सप्रेस रेलसेवा 23 नवम्बर से 6 दिसम्बर 2026 तक जबलपुर से प्रस्थान कर परिवर्तित मार्ग सोगरिया-कोटा सी केबिन-गुरला होकर संचालित होगी। इस दौरान रेलसेवा का सोगरिया स्टेशन पर प्रात: 06.35 बजे आगमन एवं 06.45 बजे प्रस्थान होगा। गाड़ी संख्या 12182, अजमेर-जबलपुर एक्सप्रेस रेलसेवा 23 नवम्बर से 7 दिसम्बर 2026 तक अजमेर से प्रस्थान कर परिवर्तित मार्ग गुरला-कोटा सी केबिन-सोगरिया होकर संचालित होगी। इस दौरान रेलसेवा का सोगरिया स्टेशन पर रात्रि 21.50 बजे आगमन एवं 22.00 बजे प्रस्थान होगा।

सीतारामपुरा टोल प्लाजा पर दहशत फैलाने वाले पुलिस गिरफ्त में

जयपुर (कासं)। जयपुर में रिंग रोड स्थित सीतारामपुरा टोल प्लाजा पर फायरिंग कर दहशत फैलाने के मामले में पुलिस को आरोपियों को गिरफ्तार किया है। मामले में सांगानेर सदर थाना पुलिस और डीएसटी साउथ की टीम ने कार्रवाई की है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से दो अवैध पिस्टल भी बरामद की हैं। वारदात में इस्तेमाल बोलेरो कैंपर गाड़ी को पुलिस पहले ही जब्त कर चुकी है। डीसीपी साउथ राजर्षि राज ने बताया कि 19 नवंबर की रात सीतारामपुरा टोल प्लाजा पर बिना नंबर की बोलेरो कैंपर लेकर पहुंचे बदमाशों ने टोल बैरियर तोड़ दिया था। इसके बाद टोल कर्मचारियों को डराने और जान से मारने की नीयत से फायरिंग कर दहशत फैला दी थी। घटना के बाद सांगानेर सदर थाना पुलिस और डीएसटी साउथ की टीम ने जांच शुरू की। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 19 नवंबर को ही दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान धनराज गुर्जर उर्फ डीके गुर्जर (36) निवासी सूरजपुरा, सांगानेर सदर और बनवारी मीणा उर्फ बन्नू चांदा (24) निवासी थूणी मंगलदास, कोटखावदा के रूप में हुई है। पुलिस जांच के दौरान धनराज गुर्जर की निशानदेही पर वारदात में इस्तेमाल की गई अवैध पिस्टल बरामद की गई। वहीं, उसके साथी बनवारी मीणा के कब्जे से भी एक अन्य अवैध पिस्टल मिली। पुलिस ने अवैध हथियारों की बरामदगी के संबंध में दोनों आरोपियों के खिलाफ अलग-अलग मामला दर्ज किया है।

Principal medical officer, Govt. Hospital, Nasirabad (Ajmer)

NOTICE INVITING BIDS

UBN No.: Services/2026-27/0100/058

Bids for Procurement of Cleaning Services for government sub district hospital nasirabad laboratory are invited from interested bidders up to 27.11.2026 05.00 PM. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://shpp.rajasthan.gov.in) of the state, and respective department 's website. The approximate value of procurement is INR 12,39,240.00

प्रमुख चिकित्सा अधिकारी
राज. सामा. चिकित्सालय
नसीराबाद

DIPR/C/18493/2026

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक कैलाश त्रिवेदी के लिए उदय प्रिन्टर्स 43-ए, माली कॉलोनी चांदपोल बाहर जयपुर से मुद्रित एवं डी-38, प्रधानपथ, चौमू हाउस, सी स्कीम, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक कैलाश त्रिवेदी* । *पीआईबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार।
फोनः 0141-4038281, Email:- lokjeewanjpr@gmail.com भीलवाड़ा कार्यालयः 207-214, नागौरी गार्डन, लोकजीवन कॉम्पलेक्स, भीलवाड़ा। फोनः 01482-355985, Email:- lokjeewan@gmail.com, मो. 8306792625